BACHELOR OF EDUCATION
AND
DIPLOMA-IN-ELEMENTARY EDU.
Regular Mode

GYAN BHARTI
COLLEGE OF EDUCATION
Raniganj, Tekari

B.Ed. & D.El.Ed. Programme

सृजनात्मकता (CREATIVITY)

अर्थ, परिभाषा और विशेषताएँ

सृजनात्मकता/रचनात्मकता

सृजनात्मकता (Creativity) सामान्य रूप से जब हम किसी वस्तु या घटना के बारे में विचार करते हैं तो हमारे मन-मस्तिष्क में अनेक प्रकार के विचारों का प्रादुर्भाव होता है। उत्पन्न विचारों को जब हम व्यावहारिक रूप प्रदान करते हैं तो उसके पक्ष एवं विपक्ष, लाभ एवं हानियाँ हमारे समक्ष आती हैं। इस स्थिति में हम अपने विचारों की सार्थकता एवं निरर्थकता को पहचानते हैं। सार्थक विचारों को व्यवहार में प्रयोग करते हैं। इस प्रकार की स्थिति सृजनात्मक चिन्तन कहलाती है।

इसे **एक उदाहरण** द्वारा स्पष्ट किया जा सकता है। **जेम्स वाट** एक वैज्ञानिक था। उसने रसोईघर से आने वाली एक आवाज को सुना तथा जाकर देखा कि चाय की केतली का ढक्कन बार-बार उठ रहा है तथा गिर रहा है। एक सामान्य व्यक्ति के लिये सामान्य घटना थी परन्तु सृजनात्मक व्यक्ति के लिये सजनात्मक चिन्तन का विषय थी।

यहाँ से **सृजनात्मक चिन्तन** की प्रक्रिया प्रारम्भ होती है। जेम्सवाट ने सोचा कि भाप में शक्ति होती है इसके लिये उसने केतली के ढक्कन पर पत्थर रखकर उसकी शक्ति का परीक्षण किया। इसके बाद उसने उसका उपयोग दैनिक जीवन में करने पर विचार किया तथा भाप के इन्जन का निर्माण करने में सफलता प्राप्त की।

सृजनात्मक व्यक्ति की विशेषताएँ

Characteristics of Creative Person

सृजनात्मक व्यक्ति को उसके गुण, कार्य एवं व्यवहार के आधार पर पहचाना जा सकता है क्योंकि सृजनात्मक बालक विभिन्न प्रकारों में सामान्य बालकों से भिन्न होता है। इसी प्रकार के अनेक कार्य ऐसे होते हैं जो कि सामान्य बालकों एवं सजनात्मक बालकों में अन्तर स्थापित करते हैं।

सृजनात्मक बालकों या व्यक्तियों की प्रमुख विशेषताएँ निम्न हैं-

1. सृजनात्मक व्यक्ति जिज्ञासु होता है (Creative person become curious)

सृजनात्मक व्यक्ति पूर्णत: जिज्ञासा से सम्पन्न माना जाता है। वह प्रत्येक विचार या घटना के बारे में विभिन्न प्रकार के प्रश्न पूछता है तथा जब तक उसकी जिज्ञासा शान्त नहीं होती ज्ञान प्राप्त के लिये व्याकुल रहता है। प्रत्येक घटना के सन्दर्भ में वह सकारात्मक एवं विश्लेषणात्मक रूप से अध्ययन करने का प्रयास करता है जिससे वह घटना के मूल तथ्य एवं कारण तक पहुंच सके।

2. सृजनात्मक व्यक्ति चुनौतियाँ पसन्द करते हैं (Creative person like challenges)

सृजनात्मक व्यक्ति कभी भी चुनौतियों से नहीं डरता। वह प्रत्येक चुनौती का साहस से सामना करता है तथा परिस्थितियों को अपने अनकल बनाने का प्रयास करता है। वह प्रत्येक समस्या का समाधान अपनी क्षमता एवं योग्यता के आधार पर करता है। इसलिये वह आत्म-विश्वास से परिपूर्ण होता है।

3. सृजनात्मक व्यक्ति प्रयोगों से भयभीत नहीं होते (Creative persons do not afraid to experiments)

सृजनात्मक व्यक्ति को किसी भी सार्थक निष्कर्ष पर पहुँचने के लिये अनेक प्रकार के प्रयोग करने पड़ते हैं। ये प्रयोग प्रयोगशाला के अतिरिक्त समाज में भी करने पड़ते हैं। अनेक स्थितियों में प्रयोगों के नकारात्मक परिणाम भी निकलते हैं परन्तु सृजनात्मक व्यक्ति उन नकारात्मक परिणामों से भयभीत नहीं होता तथा निरन्तर रूप से यह कार्य करना प्रारम्भ करता रहता है। उसके प्रयोगों की निरन्तरता उस समय तक बनी रहती है जब तक कि वह किसी निश्चित निष्कर्ष पर नहीं पहुँचता।

4. सृजनात्मक व्यक्ति उच्च मानसिक स्तर के होते हैं (Creative people become high mental level)

सृजनात्मक व्यक्तियों की मानसिकता उच्च स्तरीय होती है। वह किसी सामान्य व्यवस्था को स्वीकार करने में विश्वास नहीं रखते वरन उसके सर्वोत्तम स्वरूपको विकसित करने तथा उसको अधिक उपयोगी बनाने में विश्वास रखते हैं। इस प्रकार की मानसिकता एक ओर उनकी सृजनात्मकता में वृद्धि करती है वहीं दूसरी ओर विकास मार्ग को प्रशस्त करती है।

5. आलोचनात्मक चिन्तन एवं सृजन में विश्वास (Belief in critical thinking and creation)

सृजनात्मक व्यक्ति में आलोचनात्मक चिन्तन एवं सृजन के प्रति उत्सुकता पायी जाती है। ऐसे व्यक्ति प्रत्येक घटना को ज्यों का त्यों स्वीकार नहीं करते वरन् उस पर विचार करके उसे सर्वोत्तम बनाने का प्रयास करते हैं। इस प्रकार के व्यक्तियों को सृजनात्मक परिस्थितियों के निर्माण में कुशलता प्राप्त होती है क्योंकि वे प्रत्येक परिस्थिति को अपने अनुरूप बनाने में सफल होते हैं। प्रस्तुतीकरण की योग्यता भी इनका श्रेष्ठ एवं उपयोगी गुण होता है।

6. विश्लेषण एवं संश्लेषण की योग्यता (Ability of analysis and synthesis)

सृजनात्मक व्यक्तियों में किसी भी तथ्य एवं घटना के विश्लेषण करने की योग्यता होती है जिसके आधार पर वह घटना के मूल तथ्य या मूल कारण तक पहुँच पाते हैं। इसके साथ-साथ वे विभिन्न सिद्धान्तों, नियमों एवं सृजन में संश्लेषण पद्धति का प्रयोग करते हैं तथा विभिन्न बिखरे हुए विचारों एवं तों का संश्लेषण करके नवीन विचारों का सृजन करते हैं। इस प्रकार सृजनात्मक व्यक्ति संश्लेषण एवं विश्लेषण की योग्यता से युक्त होते हैं।

7. मस्तिष्क उद्वेलन की स्थिति (Situation of brain storming)

सृजनात्मक व्यक्तियों में मस्तिष्क उद्वेलन की स्थिति देखी जाती है। ये व्यक्ति किसी भी घटना या समस्या समाधान के लिये एक पक्षीय विचार नहीं करते वरन् विविध विचारों का सृजन करते हैं तथा सर्वोत्तम विचार या उपाय को समस्या समाधान के लिये प्रस्तुत करते हैं। इस प्रकार ये व्यक्ति प्रत्येक समस्या का सर्वोत्तम समाधान खोज सकते हैं।

8. अनुसन्धान की प्रवृत्ति (Tendency of research)

सृजनात्मक व्यक्तियों में अनुसन्धान की प्रवृत्ति पायी जाती है जिसके आधार पर ये प्रत्येक अवस्था को उसके सामान्य स्वरूप में स्वीकार नहीं करते उसमें नया परिवर्तन करने का विचार रखते हैं। इसके लिये ये विभिन्न प्रकार के प्रयोग करते हैं। इस प्रकार के कार्य ये सिद्ध करते हैं कि एक सृजनात्मक व्यक्ति अनुसन्धान एवं प्रयोगों के प्रति सकारात्मक भाव रखता है।

9. प्रामाणिक तथ्यों का संकलन (Collection of standard factors)

सृजनात्मक व्यक्ति किसी भावना या विचारों में बहकर कार्य योजना का निर्माण नहीं करते वरन् प्रामाणिक तथ्यों के आधार पर अपनी योजना बनाते हैं जिससे कि उस योजना के व्यावहारिक एवं सार्थक परिणाम निकलें; जैसे-एक व्यक्ति समाज में व्याप्त कुरीतियों के बारे में अपना चिन्तन प्रारम्भ करने पर स्वस्थ परम्पराओं का विकास करना चाहता है तो वह कुरीतियों से सम्बन्धित सत्य घटनाओं को अपने चिन्तन का आधार बनायेगा।

10. वैज्ञानिक दृष्टिकोण (Scientific view)

सृजनात्मक व्यक्तियों में वैज्ञानिक दृष्टिकोण का प्रभाव देखा जाता है। इस प्रकार के व्यक्ति सामाजिक व्यवस्था में भी उन विचारों एवं परम्पराओं को स्थान देते हैं जिनका प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से विज्ञान से सम्बन्ध होता है। इनके कार्य एवं व्यवहार में तथ्यों का क्रमबद्ध प्रस्तुतीकरण देखा जाता है। यह प्रत्येक कार्य को व्यवस्थित एवं संगठित रूप में सम्पन्न करते हैं। तर्क एवं चिन्तन के आधार पर वैज्ञानिक एवं समाजोपयोगी विचारों का सृजन करते हैं।

उपरोक्त विवेचन के आधार पर समाज में सृजनात्मक व्यक्तियों तथा विद्यालय में शिक्षक द्वारा सृजनात्मक बालकों को पहचाना जा सकता है। इस आधार पर सृजनात्मक बालकों के लिये अनुकूल परिस्थितियों का निर्माण किया जा सकता है।